

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की जैमासिक पत्रिका

ISSN-2348-3660

अक्टूबर-दिसम्बर, 2024

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा
सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका



पारम्परिक खेल में संगीत, नृत्य और नाट्य प्रसंग

Z Axis Exhibition Design Pvt. Ltd.

An ISO 9001:2000 Company

सोच नई
कीमत वही
सौर ऊर्जा सहित घर बनवायें
भारी बिलो से छुटकारा पायें

घर बनवाते समय योजनाबद्ध तरीके से खिड़कियां बाथरूम
आदि लगवाये जाय तो सौर ऊर्जा से आपका घर जगमगायेगा।



Z-AXIS OFFICE BUILDING, NOIDA



SOLAR POWER CONTAINER HOUSE



COTTAGE DESIGN



OFFICE BUILDING, COCHIN

Contact Us:

www.z-axis.co.uk

P +44 208 0904451(London), P +91 11 41402258 (Delhi), M +91 9312222762

Address: 1090, Arun Vihar, Sector 37, Noida. 201303 (U.P.) India

Phone: 120-4232258 Mobile: 09312222763

Email: zaxisindia@gmail.com

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच
2. पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा
3. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
4. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
5. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक् सान्याल
6. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
7. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
8. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
9. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
10. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. महेन्द्र भानावत
2. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
3. प्रो. ऋचा नागर
4. डॉ. अरविन्द कुमार
5. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
6. भारत रत्न भार्गव
7. डॉ. गौतम चटर्जी
8. डॉ. जाकिर अली 'रजनीश'
9. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
10. प्रो. डॉ. बलीराम धापसे
11. प्रो. डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
12. डॉ. अपूर्वा अवस्थी
13. कुमकुम शर्मा

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह-सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी-प्रिया' बी-8, डिफेन्स कालोनी,
तेलीबाग, लखनऊ - 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : <https://www.kalavasudha.com>

ई-मेल : kalavasudha01@gmail.com



मो. : 8052557608
(प्रधान संपादक)

मो. : 9889835202
(संपादक)

मो. : 8009800436
(सह-संपादक)

“कला वसुधा का वेब अंक आप

Not Nul (<https://www.notnul.com>) पर पढ़ सकते हैं।”

सिलसिला.....

पारम्परिक खेल में संगीत, नृत्य और नाट्य प्रसंग

कहना-सुनना	4
1. खेल गीतों का विकास और उनकी संरचना	—डॉ. श्याम सुंदर दुबे 7
2. प्राचीन भारतीय खेल परंपराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य	—डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ललित 11
3. प्राचीन भारतीय खेल परंपरा में नाट्य : एक अध्ययन	—प्रो. डॉ. चंद्रशेखर कणसे 16
4. मालवा की खेल परंपराएँ : मनोरंजन और स्वास्थ्य से लेकर नाट्य एवं संगीत के परिप्रेक्ष्य	—प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा 23
5. भारतीय खेल परम्पराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य	—डॉ. सुबाष चन्द सिंह कुशवाहा 28
6. सांझी माई खोल किवार, मैं आई पूजन को द्वार	—डॉ. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी 34
7. भारतीय लोक परम्पराओं के खेलों में संगीत-नृत्य और नाट्य	—डॉ. बी.के. चन्द्र सखी 36
8. 'खेल और संगीत' बनाम 'लोक बाल क्रीड़ाएँ'	—डॉ. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या' 40
9. बुन्देलखंड के खेल गीत और सुआटाऽकी ऐतिहासिकता	—प्रोफेसर सरोज गुप्ता 44
10. कजरी : खेल नृत्य और नाटक	—प्रोफेसर किरण शर्मा 49
11. भारतीय पारम्परिक खेल और प्रदर्शनकारी कलाएँ	—डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग' 54
12. बुन्देली क्रीड़ाओं में लय	—कीर्ति दीक्षित 58
13. पारंपरिक खेलों के साथ विलुप्त होती समरसता	—योग मिश्र 63
14. पारंपरिक खेलों से समृद्ध होता हिंदी सिनेमा : शू शड़क नाव गई लुढ़क	—शशांक दुबे 66
15. हमारे भूले बिसरे परम्परागत लोक-खेल	—राकेश जैन कोटखावदा 68
16. पारंपरिक खेलों में संगीत, नृत्य और नाटक की भूमिका	—हेमन्त वर्मा 72
17. 'संजा बाई'	—दिनेश दीक्षित 74
18. त्रिपुरा की सांस्कृतिक विविधता की समृद्ध अंग जनजातीय खेल	—डा. मुनीन्द्र मिश्र 76
19. भारतीय खेल परंपराओं में उत्तराखंड का लोक संगीत	—डॉ. माधुरी बड़थवाल 79
20. पारम्परिक संगीतमय खेल	—डा. अर्चना कुशवाहा 82
21. भारतीय खेल परम्पराओं में संगीत नृत्य और नाट्य	—डॉ. जयशंकर राय 84
22. भारतीय पारम्परिक लोक खेलों में गीत, संगीत, नृत्य एवं अभिनय का समावेश	—विजय बहादुर श्रीवास्तव 95
23. एक साधे सब सधे	—निर्मला ढोसी 100
24. खेल परंपराएं या परंपराओं का खेल तमाशा	—अजय कुमार 103
25. 'भारतीय खेल - परंपराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य'	—'डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक' 106
26. नाटकीयता एवं गीतों से जुड़ी हुई पंजाब की खेल परंपराएं	—डॉ. ममता धवन 108

27.	कबड्डी, कुश्ती और गीत—संगीत से सजी नागपंचमी की परंपराएँ	—जिज्ञासा सिंह	110
28.	प्राचीन भारतीय खेल परम्पराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य	—अवनी प्राविनभाई पागर	113
29.	भारतीय लोक खेलों में गीत संगीत नृत्य और अभिनय	—बालकीर्ति	115
30.	संगीत, नृत्य और नाट्य तथा भारतीय खेल परम्पराओं में विकास	—लोकनाथ शर्मा	125
31.	संगीत, नृत्य और नाट्य तथा भारतीय खेल परम्पराओं में विकास	—रुक्मिणी जायसवाल	127
32.	प्राचीन भारतीय खेल परम्पराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य संदर्भ देवारी नृत्य	—डॉ. राम बहादुर मिश्र	128
33.	बालकों के कुछ बुन्देली खेल गीत	—डा. वीरेन्द्र निर्झर	130
34.	‘छप्पन-छूरी’ अवध क्षेत्र का लोकप्रिय खेल में गीत, संगीत और नाट्य	—डॉ. विनय दास	136
36.	प्राचीन भारतीय खेल परम्पराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य	—कुसुम वर्मा	138
37.	गीत संगीत से सजे भारतीय संस्कृति को समृद्ध करते श्रावण मास के कुछ पारंपरिक खेल और अनुष्ठान	—डा. शुभ्रा उपाध्याय	141
38.	प्राचीन भारतीय खेल परम्पराओं में संगीत, नृत्य और नाट्य	—आरती	145
39.	भारतीय खेल परम्परा और उत्तराखंड के लोक नृत्य	—डॉ. चंपा शिवदत्त मासीवाल	149
40.	‘भुंडा-भुंडारिया कितना की जोर’ बनाम हिमाचल के परंपरागत खेल	—निशा नाग	153
41.	कन्नौज में खेले जाने वाले खेल और उनके गीत	—डॉ. अपूर्वा अवस्थी	156
42.	प्रतिक्रिया		158
	1. दया प्रकाश सिन्हा, 2. डा. रमा यादव 3. अशोक कुमार आजाद		
	4. राकेश जैन कोटखावदा, 5. बी.के. चन्द्रसखी, 6. योग मिश्रा		
	7. रजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द. पंकज निगम,		
43.	पुस्तक समीक्षा : लोक पर केन्द्रित एक महत्वपूर्ण कृति ‘लोक’ : समाज संस्कारों और कला—सौन्दर्य	—डॉ. अपूर्वा शुक्ला	163

प्रधान सम्पादक शाखा बंद्योपाध्याय सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी सह-सम्पादक डॉ. ज्योति सिंह	विधि परामर्शी रमेश चन्द्र पाण्डेय अजीत श्रीवास्तव	व्यवस्था सहयोगी देवाशीष, पर्ण शिशिर, ऋचा, राहुल सोनू	संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त
			सर्वाधिकार सुरक्षित पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।
			पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।
			न्याय क्षेत्र लखनऊ
			इस अंक का मूल्य 200/- (पोस्टल व्यय सहित)
सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी-प्रिया' बी-8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029 वेबसाइट : www.kalavasudha.com ई-मेल : kalavasudha01@gmail.com मो. : 8052557608, 9889835202			
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा मुद्रक : प्रिन्टआर्ट ऑफसेट, 33 कैण्ट रोड, लखनऊ RNI - Regd. PRESS/2024 / 624 / 00002209 मो. : 9839011924 से मुद्रित तथा 'सांझी-प्रिया' बी-8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।			
प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।			

कहना—सुनना

आदरणीय सुधी पाठक गण ।

सादर सप्रेम स्नेहिल अभिवादन सम्प्रति यह कला वसुधा का विशेषांक कुछ विशेष विषय पर है। जो कर्म हमारे जीवन से तहों में घुस कर समाया है और उसे हम उन तहों से निकालने की दृष्टि विकसित कर उन्हें ढूँढ पाना और उन पर चंद शब्द लिखना सर्वाधिक कठिन कार्य तो है। पर इतना नहीं। जो हमारे जीवन के हर पल में रचा बसा हो उसे मन की आँखों से समझ कर देखना और लिखना मुश्किल तो है। इस बार कला वसुधा के विशेषांक का विषय है “भारतीय पारम्परिक खेलों में संगीत नृत्य नाट्य।”

इस बार पहली बार यह महसूस हो रहा है कि यह पत्रिका आडियो वीडियो विजुअल होनी चाहिये। खेल में भी जो उमंग, उत्साह, लगन, प्रतिस्पर्धा, सद्भाव, मेहनत, खेल को आनन्द के साथ जीने की इहा और न जाने क्या-क्या वो सब लेखनी से व्यक्त नहीं हो सकता। इतने सब जज्बे के बिना संगीत नृत्य और नाट्य के स्पर्श से अछूते रह नहीं सकते हैं।

ज्यादा नहीं अभी कुछ समय पूर्व के वर्तमान की आनन्द दायक संगीत नृत्यमय खेल की प्रस्तुतियों को हम सभी साक्षी रहे हैं। यह बच्चों के जीवन में सहजात गुण है। कुछ वह अपने आस पास के माहौल और संस्कार से गढ़ कर नित जीवन खेल रचता है जो शायद कहीं उसके लिये सहज अभिव्यक्ति और अनुभूति दोनों हैं। समय था दीपावली पर हमारे पौत्र जी अपने दादी दादू के पास आये थे दीपावली का त्यौहार मनाने। उनके लिये हर कार्य ही एक नवीन कौतुक था पूजा से लेकर पटाका फोड़ने तक जो बहुत उत्सुकता से अपनी सहभागिता दिये। उनकी एक-एक पल की

उत्सुकता और हर पल के प्रति जिज्ञासा और उसे खेल की तरह आनन्द पूर्वक आस्वाद करने का दृश्य देखना हम लोगों के लिये एक सुखद अनुभव था। फिर उक्त सभी उपक्रमों के परिणाम स्वरूप हमारे पोते के मौलिक कार्यक्रम रात्रि में हुए जो वो को पूरे उत्साह से गा गाकर नाचकर प्रस्तुत कर रहे थे उसमें उनके खेल को अकेले शुरू करके संगीत नृत्य के साथ बढ़ाने की प्रक्रिया अद्भुत थी जिसमें उसने अपना सम्पूर्ण अस्तित्व खो दिया लगता था यथा—नृत्य गीत के साथ गीत के बोल थे—

पुत्ते—पुत्ते पाइयाँ ते
पुत्ते पुत्ते पाइयाँ
मुक्सी ने नच्चू किया
तो दादी ताली बजाइयाँ
पुत्ते पुत्ते पाइयाँ तो
मम्मी ताली बजाइयाँ
पुत्ते पुत्ते पाइयाँ तो
बाबा गाना गाइयाँ
पुत्ते पुत्ते पाइयाँ तो
दादू जादू सिखाइयाँ
पुत्ते पुक्ते पाइयाँ तो
धिन चक धिन चक धिन

2. कई रागों के सम्मीश्रण से
एक गीत गाया

दारा ते दारा ते दारा ते दारा दारा

ऐसे ही अनेकों उसने स्वस्फूर्त कविता, नृत्य नाट्यमय प्रदर्शनों को उसके सहज खेल-खेल में किये।

3. एक नया गाना—

अन्ते पुते भाई अन्ते पुते

अन्ते पुते भाइया अन्ते पुते

अन्ते पुते बाबा अन्ते पुते

अन्ते और अन्ते पुते अन्ते पुते पर लोट पर लोट कर गाना नाचना मजे लेना देना

दोनों शामिल था मुझे लगता है बच्चे हर चीज इसलिये जल्दी सीख जाते हैं फिर उनका अवचेतन मन उस मिले हुए संस्कार के साथ कुछ नवीन— नवीन खेलों की उत्पत्ति भी करता है।

पारम्परिक रूप से तो हम सभी बचपन से अपनी पूर्व पीढ़ियों से अनेकों खेल सहज ही ले लिये थे और उनमें अपनी कुछ मौलिकतायें भी जोड़ना चाही कभी-कभी मौलिकता जोड़ने पर अपने से बड़े बच्चों से डाँट भी खाई। खैर जो भी हो, खेल चाहे जैसे भी हो वे सभी शारीरिक और मानसिक विकास करते हैं। आगे चलकर कभी-कभी अधिक आवश्यकता की पूर्ति भी करते हैं। यह सार्व भौम सत्य है कि सिर्फ हम मनुष्य ही नहीं सभी पशु पक्षी जल के जीव आदि भी खेलकर मनोरंजन तो करते ही हैं।

एक समय था जब बड़े बूढ़े आदि कहते थे कि खेलोगी कूदोगे, बनोगे गँवार, जो पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब। पर आज समय बदल गया है सोच और खेल का नजरिया भी बदल गया है। यदि सोदेश्य पूर्ण कोई भी काम हो तो हमे अच्छा फल देता है। बच्चों के खेल, जवानों के खेल और बड़े बूढ़ों के खेल सभी का अपना-अपना जगह महत्व है। नाटक खेल का, रास लीला, राम लीला कठपुतली, नौटंकी, तमाशा, स्वांग, नकल आदि सभी तो पारम्परिक लोक नाट्य को लोक में खेल ही कहा जाता है। यहाँ तक हमारा पंचम वेद नाट्य शास्त्र में भी नाट्य खेल की श्रेणी में रखा गया है।

नाट्य खेल की मुनियों की जिज्ञासा पर भरत मुनि ने नाट्य वेद की उत्पत्ति को संदर्भ कथा सुनाई और कहा—

“श्रूयतां नाट्य वेदस्य